आत्मा ज्योति की माया रूपी आंधी से लड़ाई है
इसी माया ने आधा कल्प से हमारी नींदे उड़ाई है
देह अभिमान का विष पिलाकर किया हमें बेहोश
अपने दुखों के लिए देने लगे हम इक दूजे को दोष
बाबा से पीकर ज्ञान का अमृत आया हमको होश
देह अभिमान मिटा देंगे भर लिया है मन में जोश
पवित्रता के पथ पर चले माया से सावधान होकर
नहीं खाएंगे देह अभिमान वश विकारों की ठोकर
अपने योग की शक्ति से सारी दुनिया को बदलेंगे
धर्मराजपूरी से हम अपना सर उठाकर निकलेंगे

इक दिन हम आत्माएं सम्पूर्ण पावन बन जाएगी
खुद लक्ष्मी हमारे गले में वरमाला डालने आएगी
ॐ शांति